12-7-12 ओम् शान्ति मधुबन

सम्मान समारोह तथा भट्ठी में आई हुई टीचर्स बहिनों प्रति बापदादा का मधुर सन्देश (गुल्जार दादी)

आज अमृतवेले सर्व टीचर्स बहनें जो भिन्न-भिन्न ज़ोन की आई हुई हैं, उन्हों का यादप्यार लेते हुए वतन में पहुंची तो बापदादा सामने खड़े थे और दूर से दृष्टि दे रहे थे। आगे जाते अपनी अमूल्य बांहों के हार में समा लिया और मुख के सुनहरे बोल बोले ''आओ मेरी मस्तकमणि बच्ची आओ। बाप के होलीवुड की होली एक्टर आओ।'' बस यह आलाप सुनते-सुनते शक्ति के सागर में समाते हुए मैं सम्मुख पहुंच गई।

उसके बाद बाबा बोले बच्ची आज किसकी याद लाई हो? मैं बोली बाबा आपके पास तो आपके राइट हैण्डस साथी टीचर्स की यादप्यार पहुंच ही गई है। बाबा बोले, देखो बच्ची सिर्फ यादप्यार नहीं पहुंची है लेकिन सब मेरे विश्व सेवा के निमित्त सहयोगी बाबा के गले का हार बन बाप में समाये हुए हैं। यह सुनते मैंने देखा बापदादा के गले में सब मणियां रंग बिरंगी लाइट से चमक रही थी और बापदादा एक एक मणि से बहुत स्नेह से मिलन मना रहे थे। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्चियों ने संकल्प तो बहुत बढ़िया किया है अब वायदा निभाना पड़ेगा। बोलो, सिर्फ वायदा किया है या निभाना भी है।

बापदादा आप सब आशाओं के दीपक बच्चों से यही आश रखते हैं कि

1- सदा अपने किये हुए दृढ़ संकल्प को बार-बार स्मृति स्वरूप में लाते रहना।

2- हिम्मत रख बाप की मदद का अनुभव करते रहना।

3- सदा स्वराज्य अधिकारी राजा बन मन को कन्ट्रोल में रखना।

4- स्वयं को परिवर्तन कर सदा एकरस श्रेष्ठ स्थिति के आसनधारी बनकर रहना।

5- एकान्तवासी बन अशरीरी स्थिति का अनुभव करना और एकता स्थापक बनना ही है।

ऐसी शुभ आशायें सुनाते हुए बाबा बोले, बच्चियां बहुत बिजी रहती हैं। आज बच्चियों को वतन की सैर कराते हैं। ऐसे कहते बाबा ने संकल्प द्वारा सबको वतन में इमर्ज किया और सब अर्ध चन्द्रमा के रूप में, स्नेह रूप में इमर्ज हो गये। बाबा एक एक बच्चे को बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे। सभी स्नेह में समाये हुए थे। कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची, बाप के पास बच्चियां आई हैं तो क्या सौगात देंगे! मैं बोली जो बाबा दे, इतने में देखा बाबा का कहना और एक ट्रे में बहुत सुन्दर चमकती हुई राखियां थी। हर एक राखी में भिन्न-भिन्न रंग के हीरे चमक रहे थे। हीरे के अन्दर शक्तियों की लिखत थी। बाबा ने ताली बजाई तो सबके हाथों में राखी पहुंच गई। सब राखी देख हर्षित हो रहे थे और बापदादा भी मीठा मिलन मना रहे थे। उसके बाद बाबा बोले मेरे सिकीलधे विश्व रक्षक बच्चे, इस राखी को सदा दिल में साथ रखना। हर श्रीमत को पालन करते कराते रहना।

उसके बाद बाबा ने जानकी दादी को साथ में रतनमोहिनी दादी, मुन्नी बहन, मोहिनी बहन, ईशू बहन, अपनी शारदा बहन, सरला बहन आदि सभी अथक सेवाधारियों को इमर्ज किया, बहुत-बहुत सेवा की मुबारक दी और हर एक को बहुत दिल का प्यार दिया। वतन में जैसे यह महफिल लग गई। ऐसी महफिल मनाते सब स्थूल वतन पहुंच गये। ओम् शान्ति।